रिकार्ड:-इस पाप की दुनियाँ से... ओम शान्ति प्रातःक्लास 22-5-67

पाप आत्माओं की दुनिया और पुण्यात्माओं की दुनिया। नाम आत्मा का ही रखा जाता है। अभी यहाँ पर दुःख है तब पुकारते है। पुण्यात्माओं की दुनिया मे पुकारते नही है कि कहीं ले चलो। तुम बच्चे जानते हो कि यह कोई पण्डित, वा सन्यासी वा शास्त्रवादी आद नही सुनाते है। यह खुद भी कहते है कि मै यह ज्ञान नही जानता था। रामायण आद शास्त्रतो ढेरी पढते थे। हम ज्ञान मे तुमको सुनाता हूँ। यह भी सुनते है। अब यह है पापात्माओं की दुनिया। पुण्यात्माओं के चित्र भी यहाँ है परन्तु दिखाने भी भासना नही आती है। समझेंगे कि यह है कर गये है। बस पुजा करके आ जाते है। शिव के मन्दिर मे भी पुजा करेंगे। तुम बच्चे अब किसकी पुजा करेंगे? तुम जानते हो कि ऊँच ते ऊँच भगवान शिव है। वो है ही ओविडयण्टबाप, ओविडयण्ट टीचर, ओवीडियण्ट परसीप्टर। साथ ले जाने की गारण्टी करते है। ऐसी गारण्टी और कोई गुरु आद कर नही सकते। सो भी वो कोई सभी को थोडेई ले जावेंगे। अब तुम सम्मुख बैठे हो यहाँ से अपने घर मे जाने पर भी तुम भूल जावेंगे। यहाँ सामने सुनने से मजा आता है। बाप-बार-2 कहते है कि बच्चो अच्छी रीती पढो। इसमे गफलत मत करो। कुसंग मे ना फसो। और ही तुच्छ बुधी हो जावेंगे। बच्चे जानते है कि हम क्या थे। क्या-2 पाप किये है। अब हम यह (देवता) बनते है। यह पुरानी दुनिया खत्म होनी है। फिर यहाँ के मकान आद छोड छोड भी क्या परवाह रखनी है। इस दुनिया का जो कुछ भी है उसको भुलना है। नही तो अटक डालेगी। इसमे दिल लगती नही। हम नई दुनिया मे जाकर अपने हीरे जवाहरो के महल बनावेंगे यहकिसी कोई चीज मे ममत्व नही। जाकर अपना राज्य करेंगे। यहाँ के पैस आद कुछ भी अच्छ नही लगते। कोई चीज अच्छी लगती होगी तो ममत्व उसमे चला जावेगा। शरीर छुटे समय धन दौलत आद याद आ जावेंगे। हमारे-2 इसी [illegible] सामने आ जावेगा। बाबा तो यहाँ पर यह मकान आद देखते है। यह सब क्या है यह तो सब खत्म होना है। हम अपनी राजधानी मे आ जावेंगे। इससे क्या दिल लगानी है। बच्चो को भी यही राय देते है कि यहाँ पर रखा ही हुआ क्या है। वहाँ पर तो बहुत सुखी रहते हो। नाम ही है स्वर्ग। अब हम तो चले है अपने वतन की ओर। यह कोई हमारा वतन थोडेई है। यह तो रावण का वतन है। इससे छुटने का पुरुषार्थ करना होता है। पुरानी दुनिया से ओपलआजाद करना है। इसलिये बाप कहते है कि कोई चीज मे ममत्व नही रखो। पेट कोई जास्ती नही मांगता है। भील लोग 10, 12रुपये मे पेट गुजरान करते है। तुम 30रुपयो मे करते हो। 30रुपये मे अच्छी तरह पेट का गुजारा हो सकता है। फालतु चीजो पर खर्चा बहुत हो जाता है। खांसी हुई, डाक्टर पास गये। चिठी लिखवाई। सो यह एक हाबी (आदत) हो जाती है। दवाई जैसी बिमारी नही होगी तो भी डाक्टर पास जावेंगे। डाक्टर के पास किसको जाना होता है यह भी समझ चाहिये। बहुत-2 आदमी जो सर्विसेबुल होते है। जीते रहे तो वो अच्छा है। बाकी तो जो काम के नही लूले लंगडे वो क्या करेंगे। परन्तु कहेंगे हम क्या मनुष्य नही है, हम भी तो मनुष्य है ना। और तुम तो बैठ नाटक अपनी हो परन्तु हसद बहुत है। ज्ञान नही है ना। समझते नही कि यह भी बोझा चढता है। तुम बच्चो को सर्विस का लिये उछल आनी चाहिये। अभी दिल्ली मे गोपो की पार्टी निकली है। गांव-2 मे सर्विस करने लिये। यह अच्छा है। सर्विस का शौक है। बाकी जो सर्विस का उमंग ही नही रखते है तो वो किस काम के। कहेंगे ऐसे तो मरे भले। जैसे बाप है वैसेही बच्चो को बनना चाहिये। बाप का ही परिचय देना है बाप को ही याद करो और बाप से वर्सा लो। बच्चो को शौक होता है कि हम बाप की सर्विस पर जाते है। बाप भी पुर्ति (हिम्मत) देते है। बाबा ने ही कहा है कि भल एक स्टेशन वेगन खरीद करो चित्र भी आफिस वाले हो। दो तीन पार्टीयाँ को निकलना चाहिये। हे भी निकले तो भी गवर्मेन्ट देगें कि भल हे मोटरे खरीद करो तो जिसमे चित्र आद अच्छी रीती ले जा सको। गवर्मेन्ट पैसे दे देगी।

ऐसी नहीं कि गवर्मेन्ट चन्दा इकठा करेगी शिव बाबा की ऐसी गवर्मेंट नहीं समझना। बाप आये ही है सर्विस पर। सर्विस के लिये ही सब कुछ है। गरीबो आद को दान करने लिये नहीं है यह तो बाप का परिचय सबको देना है। बाप एक ही है। आया भी भारत में ही है। भारत में ही सब देवताओं का राज्य था दुसरा कोई धर्म नहीं था कल की ही बात है। ल-न का राज्य था फिर राम सीता का राज्य हुआ फिर वाम मार्ग में गिरा रावण राज्य शुरू हुआ। सीढी नीचे उतरते आये। अब फिर चढ़ती कला सैपिंड की बात है। बाप कहते है कि कोई भी वस्तु में ममत्व नहीं रखो। एक है रीयल लव दूसरा आर्टीफिशल रीयल लव बाप से तब ही जब अपने को आत्मा समझे। अभी तुम बच्चों को इस दुनियाँ में आर्टीफिशल लव रखना है। यह तो रूस्तम होना ही है। इसमे क्या रखा है। सर्विस करने वाले कब दुखी नहीं कर सकते। सर्विस एकुल लक्षण अच्छा है। जैसे मम्मा बाबा अन्य बच्चों का खान-पान है वैसा ही उनका भी मिले। यही तो सब एक जैसा ही बाते है ना। फिक्र नहीं। सर्विस में बच्चों को अच्छा शौक रखना चाहिये। हमारी ईश्वरीय मिशन बडी सहज है। कोई समझते नहीं है कि धर्म कैसे स्थापन होता है। क्राइस्ट आया उसने क्या किया? उनकी आत्मा ने आकर क्रिश्चन धर्म स्थापन किया। और कुछ किया क्या? क्रिश्चन धर्म बढ़ता गया। उनकी मतपर चलते-2 सीढी नीचे ही उतरते आये है। ऐसे तो नहीं कहेंगे कि शिक्षा देकर ऊपर चढ़ाया। नीचे ही उतरते आये है। तो अनेक प्रकार की भक्ति आद सिखलाते-2 नीचे ही गिरते आये है। तुम बच्चों को देहीअभिमानी बनना है। आधा कल्प रावण राज्य में हम बाप को भूल गये। वास्तव में यह सभी ड्रामा में पार्ट भरा हुआ है। अब बाप ने आकर सुजाग किया है। बाबा ऐसे नहीं कहते कि तुम्हारी भूल है नहीं ड्रामा में पार्ट है। ड्रामाअनुसार तुमको गिरना ही था। तुम्हारा दोष नहीं है। रावण राज्य में दुनिया की ऐसी हालत हो ही जाती है। मनुष्य पाँच विकारों में फँस मरते है। बना-बनाया ड्रामा है। बाप कहते है अभी मैं आया हुआ हूँ पढ़ाने। फिर से अपनी राजाई लो। मामेकम् याद करो। मैं और कोई तकलीफ नहीं देता हूँ। एक तो बाजार की छी-2 गन्दगी नहीं खाओ। गन्दी खाते-2 तुम ढेड़ चमार बन गये हो। देवताओं के चरणों में झुकते हो। जैसे कि अल्लाह से उल्लू बन गये है। अभी तुम बच्चे जानते हो यह ड्रामा का चक्र है। जो फिर रिपीट होगा। रावण राज्य भी फिर होगा। प्रजा का प्रजा पर राज्य भी होना ही है। तुम्हारी बुधी में ड्रामा की आद मध्य अन्त का ज्ञान है। तुम ओरों को भी समझा सकते हो। पहले-2 तो बापकी याद रहनी चाहिये। यह भूलना नहीं चाहिये। सर्विस के लिये भी आपस में मिल कर साथी बना लेना चाहिये। जैसे दिल्ली से पाँच-सात गोप निकले है। वैसे ही गोपियों को भी निकलना है। इसमे डरने की बात नहीं है। चित्र आद सब तुमको मिलेंगे। तुम्हारी सर्विस जरूर होगी। कहेंगे आप चले जाते हो फिर हमको कौन सिखायेंगे? कैसे हम तो सर्विस करने तैयार है मकान आद का प्रबन्ध करें। तो बहुती के कल्याण अर्थ हिम्मत बन जावेंगी। बाबा सर्विस का शौक दिलाते है। तुम्हारे पास ऐसा तो कोई सामान है नहीं। जो कोई लूट लेवे। सेन्टर्स तो नजदीक है ही। इसमे हठयोग की बात नहीं है। बाबा यह भी नहीं चाहते है कि पैदल जावे। नही बाबा कहते है कार इस कार्य के लिये खरीद कर ली। कमेटी बननी चाहिये। हिम्मत वाले है तो सर्विस भी बढ़ती है। यह कोई वो मेला नहीं है जो 10-15 दिन मेला चला फिर खलास। यह मेला तो चलता ही रहता है। आत्मा और परमात्मा का मिलना होता है। जिनको ही मेला कहा जाता है। वो तो चल ही रहा है। यहआना अथवा प्रदर्शनी करना यह सब चलता ही आता है। मेला कब तक होगा जब सर्विस पूरी होगी। ड्रामा अनुसार बच्चों में सर्विस का बड़ा शौक चाहिये। ईश्वरीय नालेज तो मिली ही है। जो बेहद के बाप में नालेज है वो ही बच्चों की बुधी में नालेज है। ऊँच ते ऊँच बाप से फिर हम कितना ऊँच बनते है। ऐसी-2 अपने से बाते करनी है। आपस में सेमीनार करना है। बाबा से राय कर सर्विस में लग जाओ। कोई मदद की दरकार हो तो बाबा बैठे ही है। दलहलाल है ना। यह सब ड्रामा

मे नूघ है।पिर्क की कोईवात नहीहै।नहीतो स्थापना वैस होंगी। तुम वच्चो को फिक होगा। वावा को तो कुछ भी रवयाल नही रहेगा। दुसरी वात यह भी है कि जो करेगा सो पावेगा। आजक्ल हाफ पे पर फुल पे पर से भीछुड़वा कर वावा सर्विस पर वेल देते है। सो भी जो अच्छे-2 सर्विस वुल है। जैस कुलैल वाला लक्ष्मण वच्चा वहुत अच्छा सर्विसवुल है।वावा भी देरव कर छुड़वाते है। ऐस नही कि जो कहेंगे उनको छुड़वा देंगे नही सर्विसवुल देरवना होता है। अभी तुम वच्चे समझते होहम पत्थर वुधी से अव हीरे जैसा वनते है। इस पढ़ाई पर अच्छा अटेंशन देना चाहिये। वाप ज्ञान से इतना सीधा करते है माया फिर नाक से पकड़ कर गलत काम करवा देती है। सँग वहुत अच्छा करना चाहियें। आसुरी गुण नही होना चाहिये।कुसँग का रँग लगने पर गिर पड़ेंगे। वावा फिल्म आद देरवनी की भी मनाह करते है। जिनको पिक्चर देरवने की आदत होगी वो कदाचित पतित वने विना रह नही सकेंगे। वाईस्कोप ऐसी गन्दी चीज है। वैशालय है नां। यहां की हर एक एक्टविटी डर्टी है। नाम ही है वैशाल्य। स्वर्ग को कहते है शिवाल्य। आधा कल्प शिवाल्य। आधा कल्प वैश्याल्य। वाप शिवाल्य स्थापन कर रहे है। वैशाल्य को पुरे को आग लगनी है। कुम्भकरण की तरह असुर नीद मे सोये पड़े है। तुमको वन्दरे जगता है। ऐसे कदर दिरवाई पड़ते है। जरा भी कुछ समझते नही है। तुम भी अपने को अभी समझते हो कि हम शिवाल्यमे जा रहे है। पहले हम भी कदर वन्दिरयां थे। इस पर रामायण मे कहानी भी है। तुम सव कदर थे। इस पर रामायण मे कहानीभी है। तुम सव कदर थे। उनको शक्तिवान वना कर अपनी शक्ति से राजधानी स्थापन करते है। फिर रावण राज्य रवला सही जाता है। वाकी शास्त्रों मे तो है दन्तकथायें [illegible] वैठ कर सुनते है।एक शंकराचार्य कहता है कि भगवान भी नीचे उतर आवें तो भी [illegible] नही छोडेंगे। एक शंकराचार्य ने कहा हैकि मुसलमानो मिसल हिन्दुओं को भी एक-2 को चार-2 शादी करनी चाहिये। नही तो मुसलमान वहुत हो जावेंगे। ऐसे-2 शंकराचार्य को भीवहुत जाकर माथा टेकते है।भुरव हड़ताल आद करते रहते है। अभी तो कुतरों के आगे रत्न डालेंगे तो वो फेंक देंगे। इसलिये अभी कुछ देरी देरवने मे आती है। यह लोग इतनी जल्दी तो अपनी गदी नही छोडेंगे नां। वच्चो को अनेक प्रकार की युक्तियां वताते रहते है। किसीको दान नही करेंगे तो फल भी कैसे मिलेगा। पहले-2 तो 10-15 को रास्ता वता कर पिर पीछे भोजन रवाना चाहिये। पहले शुद्ध कार्य करके आओ। इसमे ही तुम्हारा कल्याण है। कोई भी देहधारी को याद नही करो। यह तो पतित दुनियां है। पतितपावन एकवापु को याद करो तो पावन दुनियां के मालिक वनो। अन्त मते सो गते हो जावेगी। तो किसी नां किसी को सदेंश सुना कर फिर भोजन रवाना चाहिये। तुम तो गूंह के गुड़े मत कैसे। वताते हो कि वाप को याद करने से इतने ऊंच वन जावेंगे।यह है ही रावण राज्य। वो लोग समझते है गांधी द्वारा भारत को राम राज्य मिला। गांधी के नामी से नेहरू निकला। फिर नेहरू से शास्त्री, फिर उसेस इन्द्रा। इन्द्रा से फिर दुसरा कोई निकलेगा। कोई क्रिश्चन को भी प्रेजिडेण्ट वना देंगे धर्म तो कोई है ही नहीनां। मनुष्य ईश्वर अर्थ दान पुण्य करते है नां।वो है इनडायरेक्ट। उनका फल दुसरे जन्म मे मिलता है। अव तो मै हुं डायरेक्ट। और अभी इस पुरानी दुनियां की है अन्त है। सतयुग मे तो दान पुण्य की वात होती है नही है।अभी है पिछाड़ी का दान। एकदम सिरेन्डर होना है। वाप तो देने लिये ही आते है। कि इनका कुछ भविष्य वन जावे। कहेंगे अच्छा तुम्हारे पास पैसे पड़े है तो जाकर सेन्टर रवालो। प्रदर्शनी वनाओ। गरीब को कहेंगे सिर्फ वोर्ड लगा दो। गेट वे टु हेवन।

भगवानिवाच है कि मामेकम याद करो। तो तुम पुजारी से पूज्य वन जावेंगे। स्वर्ग मे सुरवी तो सभी होंगे परन्तु मतवे तो नम्बर होंगे नां। [illegible] भी कम नही है। घर मे वह आई तो समझते है कि भगवती हो मिली है। उनको देरव कर रवुश होते रहते है। यह नही समझते उनेका तो मुह नर्क की तरफ है। कुमारियां वो तो वहुत सर्विस का जोश आना चाहिये कि हम भारत को स्वर्ग वना कर दिरवावेंगी। कुमारी वो 21 कुलों का उद्धार करेंगी।अर्थात 21जन्मो के लिये उदार कर सकती है। गन्धर्व विवाह कर [illegible] घर का भी उदार कर सकती है। [illegible]